Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

स्वतंत्रता के बाद भारत की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अध्ययन

Preeti Shakya[1]*, Dr. Dileep Kumar Shukla[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सारांश - *हमारे सांस्कृतिक रूप से बहुल समाज में, शिक्षा को सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों को बढ़ावा देना है, जो हमारे लोगों की एकता और एकीकरण की ओर उन्मुख है। ऐसी नैतिक शिक्षा से रूढ़िवाद, धार्मिक कट्टरता, हिंसा, अंधविश्वास और भाग्यवाद को खत्म करने में मदद मिलनी चाहिए। इस जुझारू भूमिका के अलावा, नैतिक शिक्षा में हमारी विरासत, राष्ट्रीय और सार्वभौमिक लक्ष्यों और धारणाओं के आधार पर एक गहन सकारात्मक सामग्री है। शिक्षा को इस पहलू पर प्राथमिक जोर देना होगा। आज विद्वान नई मशीनों के विकास और ऊर्जा के अनुप्रयोग से संबंधित वाद-विवाद पर बहुत समय व्यतीत करते हैं। प्राचीन विद्वान अत्यधिक बुद्धिमान थे; उन्होंने नैतिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया ताकि समाज भ्रष्टाचार और अराजकता से मुक्त हो और खुशियों से भरा हो। अन्य पीढ़ियों की तुलना में, आज के बच्चों और युवाओं में शालीनता, अखंडता, दूसरों के लिए चिंता और नैतिकता की कमी प्रतीत होती है। यह आशा की जाती है कि स्कूलों में अधिक चरित्र शिक्षा को शामिल करने से किशोरों में नशीली दवाओं के दुरुपयोग, अपराध और भावनात्मक विकारों से संबंधित कई खतरनाक आंकड़ों को कम करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, विभिन्न प्रकार की नई चुनौतियाँ और सामाजिक ज़रूरतें सरकार के लिए देश के लिए एक नई शिक्षा नीति तैयार करना और उसे लागू करना अनिवार्य बनाती हैं। इससे कम कुछ भी स्थिति को पूरा नहीं करेगा। आने वाली पीढ़ियों को मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्याय के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता से ओतप्रोत होना होगा। यह सब बेहतर नैतिक शिक्षा का तात्पर्य है।*

मुख्यशब्द - *भारत की शिक्षा प्रणाली, नैतिक शिक्षा, भावनात्मक विकार, नई शिक्षा नीति*

----------X----------

प्रस्तावना

हमने अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल की और एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की। हमारे संविधान में, हमने अपने लोगों से बहुत बड़े वादे किए और घोषणा की कि, स्वतंत्रता के माध्यम से, हम समस्याओं का समाधान करेंगे और अपने विचारों, आदर्शों और जरूरतों के अनुसार भारत के भाग्य को नया रूप देंगे। उस स्वतंत्रता से उत्पन्न पहली बड़ी समस्या हमारी लगभग आधी आबादी की निराशाजनक गरीबी और पिछड़ापन है। दूसरी समस्या उनमें से लाखों लोगों की निरक्षरता है। तीसरी समस्या हमारे लोकतांत्रिक राज्य को कमजोर करने वाली विभाजनकारी जाति और सांप्रदायिक वफादारी से उत्पन्न हुई है। इन सभी समस्याओं का समाधान हमारे लोगों को खुद ही करना होगा। कोई विदेशी शक्ति हमारी सहायता नहीं करेगी, और न ही यह वांछनीय है कि वे हमारे लिए उन्हें हल करने के लिए कहें। यह राष्ट्रीय उत्तरदायित्व हम पर स्वतन्त्र होते ही उतर आया है और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का यह भाव स्वतन्त्र भारत के प्रत्येक नागरिक को अनुभव करना चाहिए। और यह स्थिति पूरे भारत में हमारे शिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारी की घोषणा करती है। आजाद होते ही हम भारत के नागरिक बन गए। इससे पहले, हमें ब्रिटिश साम्राज्य के विषयों के रूप में संदर्भित किया जाता था। जब हम स्वतंत्र नागरिक बनते हैं, तो हम एक समृद्ध व्यक्तित्व और उच्च कद का विकास करते हैं। हमारे राजनेताओं, प्रशासकों, शिक्षकों और अन्य पेशेवर लोगों को इसके वास्तविक निहितार्थ को समझने और हमारे देश के बच्चों को एक महान देश के नागरिक होने में शामिल विशेषाधिकार और जिम्मेदारी से अवगत कराने की आवश्यकता है। नागरिकता का अर्थ है एक स्वतंत्र समाज में एक स्वतंत्र और जिम्मेदार व्यक्ति होने की स्थिति। हमें दो घटकों अर्थात् स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व पर ध्यान देना चाहिए। हम भारत की प्रगति के लिए जिम्मेदार हैं।

"हम न केवल भारत में हैं, बल्कि हम भारत के भी हैं और भारत के लिए भी हैं। जब हम आज के भारत की समस्याओं को देखते

www.ignited.in

हैं, तो हम पाते हैं कि बहुत से लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर देते हैं, पहला घटक, और इससे प्राप्त होने वाले अधिकारों पर भी, लेकिन महसूस नहीं किया है, और उस दूसरे घटक, अर्थात् सामाजिक, के महत्व पर जोर दिया है। जिम्मेदारी, और उससे बहने वाले कर्तव्य। अगर हमें अपने राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास होता, तो हम अब जो करते हैं, उससे कहीं अधिक मेहनत, अधिक कुशलता और अधिक समर्पण के साथ काम कर रहे होते।" प्रत्येक देश जो महान हो गया है, उसने अपने लोगों के माध्यम से अपने राष्ट्र के विकास के लिए जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के माध्यम से वह महानता हासिल की है। लेकिन, भारत में, हमने यह सबक नहीं सीखा है और इसके साथ ही कड़ी मेहनत भी की है। कार्यालयों और सरकार के विभिन्न विभागों में, हम अधिकांश कर्मचारियों के बीच राष्ट्रीय कर्तव्य और जिम्मेदारी और कड़ी मेहनत की भावना नहीं पाते हैं; और इससे हमारी शिक्षा भी प्रभावित होती है। यही कारण है कि हमारे संविधान में सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का वादा भी पूरा नहीं किया गया है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों पर जोर, सामाजिक जिम्मेदारी और कर्तव्यों पर कोई जोर नहीं-

शिक्षा की, विशेष रूप से हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में, संबंधित शिक्षकों द्वारा उतनी ही उपेक्षा की गई है, जितनी कि स्वयं राज्य द्वारा। हम अपने शैक्षिक लक्ष्यों और विधियों में बदलाव चाहते हैं ताकि इसे राष्ट्रीय स्तर पर और सार्वभौमिक बनाया जा सके, और उस काले उपनिवेशवादी सामग्री को हटा दें जिसने इसे हमारे ब्रिटिश शासन के दिनों से खराब कर दिया है। हमारी संसद के सत्रों में, हम उम्मीद करते हैं कि सरकार राष्ट्र को एक नई शिक्षा नीति और कार्य कार्यक्रम पेश करेगी, जो राष्ट्रीय स्तर पर और मूल्य-उन्मुख होगा। नया सूत्रीकरण हमारी शिक्षा को पहले की शिक्षा से काफी अलग बना देगा। यह संपूर्ण नहीं हो सकता है, लेकिन यह एक कदम आगे होगा, और राष्ट्र इसे बाद में बेहतर और बेहतर बना सकता है। 'ब्रह्मचारी, या छात्र, अपने ज्ञान का एक चौथाई हिस्सा आचार्य, या शिक्षक से प्राप्त करता है, और दूसरा चौथाई अपनी बुद्धि का उपयोग करने से प्राप्त करता है; तीसरी तिमाही अन्य ब्रह्मचारियों के साथ बातचीत से प्राप्त की जाती है, और चौथी तिमाही समय पर अपने जीवन और कार्य के माध्यम से प्राप्त की जाती है।' हमने आज अपनी शिक्षा प्रणाली के सभी स्तरों पर ज्ञान की भूख को खो दिया है; हमें इसे एक बार फिर से पकड़ना होगा। वर्तमान में केवल डिग्री और नौकरी की भूख है। बड़ी संख्या में भारतीय स्नातक का उद्देश्य इस प्रकार की शिक्षा का आनंद लेना नहीं है, बल्कि परीक्षा उत्तीर्ण करना और एक डिग्री प्राप्त करना है जो नौकरी पाने में उपयोगी है।

यह दुर्भाग्य से भी सच है। संवेदना का अत्याचार, बीसवीं सदी के वैज्ञानिक, विशेष रूप से जैविक, भौतिकवाद का फल, अब भारतीय युवाओं को शक्तिशाली रूप से प्रभावित कर रहा है, क्योंकि इसने युवाओं और अन्य को अन्य जगहों पर प्रभावित किया है। भारत शिक्षा में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को शामिल करने की समस्या से जूझ रहा है। उनके पास इस क्षेत्र में पूर्व और पश्चिम, प्राचीन और आधुनिक, विशेष रूप से अपने आधुनिक विचारकों और स्वामी विवेकानंद, टैगोर और महात्मा गांधी जैसे नेताओं के विचारों का खजाना है। वर्तमान भारतीय शिक्षा मूल रूप से पिछली शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा भारत में क्लर्क बनने के अपने उद्देश्य के साथ शुरू की गई एक निरंतरता है। इसका मात्रात्मक रूप से अत्यधिक विस्तार हुआ है लेकिन गुणात्मक रूप से नीचे चला गया है। इसमें प्राचीन भारतीय प्रणाली के गुण नहीं हैं। यह हर साल पुरुष नहीं, समाज के पदाधिकारी, इतने सारे वकील, डॉक्टर, इंजीनियर आदि निकलते हैं। लेकिन भारत भी चुपचाप शिक्षा में लगा हुआ है और इस विषय पर बहुत मौन रचनात्मक सोच और चर्चा भी है। हम आने वाले दशकों में अपनी शिक्षा पर इन सभी के प्रभाव को महसूस करने की उम्मीद कर सकते हैं। सच तो यह है कि आज भारत में सब कुछ शिक्षा, राजनीति, धर्म, समाज आदि में है। वह अपने लंबे इतिहास में सबसे क्रांतिकारी बदलाव के दौर से गुजर रही है। उनके आधुनिक विचारकों और नेताओं, विशेष रूप से विवेकानंद को इस संक्रमण के दायरे और संभावनाओं की पूरी समझ थी। आने वाली चीजों के आकार की भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता। वर्तमान शिक्षा संतुलित नहीं है क्योंकि यह मानव और आध्यात्मिक शिक्षा पर भौतिक शिक्षा पर जोर देती है। मौलिक सत्य यह है कि एक बच्चे में तीन वास्तविकताएं होती हैं। शिक्षा को संतुलित और अर्थपूर्ण बनाने के लिए इन तीनों वास्तविकताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

नैतिक शिक्षा के संबंध में शिक्षा आयोगों की सिफारिशों को लागू करने की आवश्यकता

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, भारत सरकार और राज्यों की एक प्रमुख चिंता राष्ट्रीय प्रगति और सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में शिक्षा पर ध्यान देना रहा है। कई आयोगों और समितियों, विशेष रूप से विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) और माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) द्वारा शैक्षिक पुनर्निर्माण की समस्याओं की समीक्षा की गई। इन आयोगों की सिफारिशों को लागू करने के लिए कुछ कदम उठाए गए; और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वैज्ञानिक नीति पर प्रस्ताव पारित होने के साथ, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक अनुसंधान के विकास पर विशेष जोर दिया गया। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में, शैक्षिक पुनर्निर्माण पर एक

www.ignited.in

नए और अधिक दृढ़ प्रयास शुरू करने की दृष्टि से शैक्षिक प्रणाली की व्यापक समीक्षा करने की आवश्यकता महसूस की गई; और शिक्षा आयोग (1964-66) की नियुक्ति शिक्षा के राष्ट्रीय पैटर्न पर और सभी स्तरों पर और सभी पहलुओं में शिक्षा के विकास के लिए सामान्य सिद्धांतों और नीतियों पर सरकार को सलाह देने के लिए की गई थी।

नैतिक शिक्षा के संबंध में शैक्षिक नीतियों की सिफारिशों को लागू करने की आवश्यकता

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, 1986 के अनुसार, आवश्यक मूल्यों के क्षरण और समाज में बढ़ती निंदक पर बढ़ती चिंता ने सामाजिक और नैतिक मूल्यों की शिक्षा बनाने के लिए पाठ्यक्रम में पुन: समायोजन की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया है। हमारे सांस्कृतिक रूप से बहुल समाज में, शिक्षा को हमारे लोगों की एकता और एकीकरण की ओर उन्मुख सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए। इस तरह की मूल्य शिक्षा से आत्मज्ञान, धार्मिक पथभ्रष्ट उत्साह, हिंसा और अंधविश्वास के विरोध को खत्म करने में मदद मिलनी चाहिए। हमारी परंपरा जिसने बौद्धिक और आध्यात्मिक प्राप्ति पर लगभग हमेशा उच्च प्रीमियम रखा है, हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होने के लिए बाध्य हैं। धर्म शिक्षा का अंतरतम केंद्र है। धर्म का अर्थ किसी विशेष प्रकार का नहीं बल्कि उसका अनिवार्य चरित्र है, जो मनुष्य में पहले से ही देवत्व की अनुभूति है। धर्म हठधर्मिता या पंथ या अनुष्ठानों के किसी समूह में शामिल नहीं है। धार्मिक होने का अर्थ है जीवन को इस तरह से जीना कि हम अपने उच्च स्वभाव, सत्य, अच्छाई और सुंदरता को अपने विचारों, शब्दों और कर्मों में प्रकट करें। सभी आवेग, विचार और कार्य जो किसी को इस लक्ष्य की ओर ले जाते हैं, स्वाभाविक रूप से समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण हैं, और सच्चे अर्थों में नैतिक और नैतिक हैं। इसी संदर्भ में शिक्षा के आधार के रूप में धर्म के विचार को समझना चाहिए। धर्म और शिक्षा उद्देश्य की पहचान साझा करते हैं।

केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति में, कई मदें हैं, जिनमें से तीन और महत्वपूर्ण हैं: शिक्षक-प्रशिक्षण का पुन: अभिविन्यास, प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण और मूल्य-उन्मुखीकरण पर जोर। उस शिक्षक-प्रशिक्षण अभिविन्यास में सरकार का जो भी योगदान हो, सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वयं शिक्षकों पर है; उन्हें हर साल विस्तार कर रहे नए ज्ञान की दुनिया के लिए अपने दिमाग को खोलना चाहिए। पश्चिमी मनोवैज्ञानिक प्रतिदिन मानवीय संभावनाओं पर नए-नए विचार लेकर आ रहे हैं, जिसमें मनुष्य के आध्यात्मिक आयाम पर अधिकाधिक भारतीय विचारों को उच्च स्थान प्राप्त हो रहा है। ये सभी नए विकास वेदांत और उपनिषदों योग, गीता और पतंजलि के योगसूत्रों से शक्तिशाली रूप से प्रभावित हुए हैं। एक शिक्षक जो इन विकासों को जानता है, वह एक अज्ञानी से बेहतर शिक्षक होगा। और हम भारत में ये सभी हमारी राष्ट्रीय विरासत के रूप में हैं; लेकिन हम उन्हें नहीं जानते हैं या उनका उपयोग नहीं करते हैं। पश्चिमी लोग हमारी तुलना में यहां उनकी सराहना कर रहे हैं और उनका उपयोग कर रहे हैं; और यही हमारा दुर्भाग्य और उनका सौभाग्य है।

शिक्षकों को तर्कसंगत दिमाग से अपनी राष्ट्रीय विरासत की मूल पुस्तकों का अध्ययन करना होगा और इस क्षेत्र में पश्चिमी के साथ तालमेल बिठाना होगा। केवल अकादमिक पक्ष ही नहीं, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्कूलों से बाहर जाने वाले छात्र का चरित्र। हम नहीं चाहते कि सिर्फ होशियार छात्रों, आत्म-केंद्रित महत्वाकांक्षी छात्रों के बैच, जो भारत या विदेश में केवल अपने लिए पैसा कमाना चाहते हैं और एक सुखद जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, हमारे स्कूलों से बाहर आएं। हम ऐसे छात्र चाहते हैं जो अपने राष्ट्र की देखभाल करें, जो हमारे लाखों आदिवासियों सहित अपने समाज के कमजोर वर्गों की देखभाल करें। स्कूल-कॉलेजों से बाहर आने वाले हमारे बच्चों में मानवतावादी जुनून भरा होना चाहिए। यह हमारे बच्चों का एक विशेष गुण होना चाहिए। बच्चों की विशेष जिम्मेदारी होती है। उनके पास अन्यत्र बच्चों की तुलना में आत्म-विकास के कहीं अधिक अवसर हैं। उन्हें इस कहावत की सच्चाई को लगातार याद रखना चाहिए: जिसे बहुत कुछ दिया जाता है, उससे बहुत कुछ की उम्मीद की जाएगी। चरित्र निर्माण में, अच्छी और महान हर चीज के निर्माण में, दूसरों के लिए शांति और स्वयं के लिए शांति लाने में, धर्म सर्वोच्च प्रेरक शक्ति है, और इसलिए, उस दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाना चाहिए। यदि अपने धार्मिक मूल के साथ शिक्षा मनुष्य की ईश्वरीय प्रकृति और मानव आत्मा की अनंत क्षमताओं में विश्वास को मजबूत कर सकती है, तो यह निश्चित रूप से मनुष्य को मजबूत, सहिष्णु और सहानुभूतिपूर्ण बनने में मदद करेगी। यह मनुष्य को अपने प्रेम और सद्भावना को सांप्रदायिक, राष्ट्रीय और नस्लीय बाधाओं से परे बढ़ाने में भी मदद करेगा।

यह भौतिक पक्ष की पूर्ण उपेक्षा के लिए आध्यात्मिक विकास पर अधिक जोर नहीं है। गरीबी, बेरोजगारी और अज्ञानता के उन्मूलन के लिए, हमें तकनीकी शिक्षा और अन्य सभी उद्योगों को विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि लोग सेवा की तलाश करने के बजाय, खुद को प्रदान करने के लिए पर्याप्त कमा सकें, और बरसात के दिन के खिलाफ कुछ बचा सकें। भारत को पश्चिमी देशों से वह सब लेना चाहिए जो उनकी सभ्यता में अच्छा है। हालांकि, एक व्यक्ति की तरह, हर राष्ट्र का अपना व्यक्तित्व होता है, जिसे नष्ट नहीं किया जाना चाहिए। भारत का व्यक्तित्व उसकी आध्यात्मिक संस्कृति में निहित है। एक संतुलित राष्ट्र के विकास के लिए हमें अपने देश की आध्यात्मिकता के साथ पश्चिम की गतिशीलता और

www.ignited.in

वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जोड़ना होगा। संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम को इस प्रकार नियोजित किया जाना चाहिए कि यह युवाओं को देश की भौतिक प्रगति में योगदान करने के साथ-साथ भारत की आध्यात्मिक विरासत के सर्वोच्च मूल्य को बनाए रखने के लिए तैयार करे। स्त्री शिक्षा उन्हें सशक्त, निडर और अपनी शुद्धता के प्रति जागरूक बनाए और यदि समाज को सुधारना है तो शिक्षा को उच्च और निम्न सभी तक पहुंचाना होगा, क्योंकि व्यक्ति ही समाज के घटक हैं। मनुष्य में गरिमा की भावना तब उठती है जब वह अपनी आंतरिक आत्मा के प्रति सचेत हो जाता है, और यही शिक्षा का उद्देश्य है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के से लाए गए नए मूल्यों के साथ भारत के पारंपरिक मूल्यों के सामंजस्य के लिए प्रयास करें।

"यह नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के परिवर्तन में है, सभी सामाजिक बुराइयों का समाधान है। अपने स्वयं के दर्शन और संस्कृति के दृढ़ आधार पर शिक्षा की स्थापना करना आज की सामाजिक और वैश्विक बीमारी के लिए सबसे अच्छा उपचार है। शिक्षा को जाति, पंथ, राष्ट्रीयता या समय की परवाह किए बिना नैतिक और आध्यात्मिक कल्याण और मानवता के उत्थान को मूर्त रूप देना है।" शिक्षा, जिसके माध्यम से हम एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं, जो दुनिया शांति और सद्भाव की ओर ले जाएगा, अभी भी बहुत दूर है। अब समय आ गया है कि हम शिक्षा के इस दर्शन पर गंभीरता से विचार करें और इस आह्वान को याद रखें-'उठो, जागो और तब मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' पाठ्यक्रम आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। नतीजतन, स्कूली शिक्षा एक अधिक भौतिकवादी और कम नैतिक संस्कृति को प्रोत्साहित करती है, कुछ नैतिक महत्व का मामला। शिक्षा हमेशा महत्वपूर्ण रही है लेकिन शायद आज से ज्यादा मनुष्य के इतिहास में कभी नहीं। एक विज्ञान आधारित दुनिया में, शिक्षा और अनुसंधान किसी देश की संपूर्ण विकास प्रक्रिया, उसके कल्याण, प्रगति और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह विज्ञान द्वारा व्याप्त दुनिया की विशेषता कि कुछ आवश्यक तरीकों से चीजों का भविष्य का आकार अप्रत्याशित है। यह एक ऐसी शैक्षिक नीति की आवश्यकता पर जोर देता है जिसमें एक अंतर्निहित लचीलापन हो ताकि यह बदलती परिस्थितियों में समायोजित हो सके। यह प्रयोग और नवाचार के महत्व को रेखांकित करता है। वर्तमान व्यवस्था की कठोरता से बाहर निकलने के लिए अब सबसे महत्वपूर्ण चीज की जरूरत है। आज की तेजी से बदलती दुनिया में, एक बात निश्चित है: कल की शिक्षा प्रणाली आज को पूरा नहीं करेगी, और उससे भी कम, कल की जरूरत। रिपोर्ट शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों और पहलुओं के बारे में सिफारिशें करती है। मुख्य बिंदु है, नैतिक शिक्षा पर जोर और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना का विकास। स्कूल की दुनिया से काम और जीवन की दुनिया में युवाओं के संक्रमण को सुविधाजनक बनाने में स्कूलों को अपनी जिम्मेदारी को पहचानना चाहिए; निःसंदेह एक बात है जिसके बारे में हमें कोई संदेह या झिझक नहीं है, शिक्षा, विज्ञान आधारित और भारतीय संस्कृति और मूल्यों के अनुरूप ही, राष्ट्र की प्रगति, सुरक्षा और कल्याण के लिए नींव के साथ-साथ साधन भी प्रदान कर सकती है।

भारतीय शिक्षा को एक व्यापक पुनर्निर्माण, लगभग एक क्रांति की आवश्यकता है। हमें प्राथमिक शिक्षा की प्रभावशीलता में बड़ा सुधार लाने, सभी स्तरों पर शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार लाने और पर्याप्त संख्या में शिक्षकों को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है; निरक्षरता को समाप्त करने के लिए। स्कूली शिक्षा पर बारह टास्क फोर्स का गठन किया गया; उच्च शिक्षा; शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षक की स्थिति; छात्र कल्याण; नई तकनीक और तरीके; जनशक्ति; इसके अलावा, इसने सात कार्य समूह, स्कूल-समुदाय संबंध स्थापित किए; पूर्व प्राथमिक शिक्षा; और स्कूल पाठ्यक्रम। टास्क फोर्स और वर्किंग ग्रुप ने कई विशिष्ट समस्याओं का विस्तृत अध्ययन किया। राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए शैक्षिक प्रणाली का पुनर्विन्यास, संरचनात्मक पुनर्गठन, शिक्षकों का सुधार, नामांकन नीतियां और शैक्षिक अवसर की समानता। उदाहरण के लिए, यह याद करने योग्य है कि आयोग ने नैतिक शिक्षा और उसके सुधार पर बहुत जोर दिया, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण नहीं हुआ। असली जरूरत कार्रवाई है। स्थिति की मार्मिकता और जिस विकट समय से हम गुजर रहे हैं, वह इस सरल लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य को रेखांकित करता है। . केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति में, कई मदें हैं, जिनमें से तीन और महत्वपूर्ण हैं: शिक्षक-प्रशिक्षण का पुन: अभिविन्यास, प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण और मूल्य-उन्मुखीकरण पर जोर। "उस शिक्षक-प्रशिक्षण अभिविन्यास में सरकार का जो भी योगदान हो, सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वयं शिक्षकों पर है; उन्हें हर साल विस्तार कर रहे नए ज्ञान की दुनिया के लिए अपने दिमाग को खोलना चाहिए। पश्चिमी मनोवैज्ञानिक प्रतिदिन मानवीय संभावनाओं पर नए-नए विचार लेकर आ रहे हैं, जिसमें मनुष्य के आध्यात्मिक आयाम पर अधिकाधिक भारतीय विचारों को उच्च स्थान प्राप्त हो रहा है। ये सभी नए विकास वेदांत और उपनिषदों के योग, गीता और पतंजलि के योग-सूत्रों से शक्तिशाली रूप से प्रभावित हुए हैं। एक शिक्षक जो इन विकासों को जानता है, वह एक अज्ञानी से बेहतर शिक्षक होगा। और हम भारत में ये सभी हमारी राष्ट्रीय विरासत के रूप में हैं; लेकिन हम उन्हें नहीं जानते हैं या उनका उपयोग नहीं करते हैं। पश्चिमी लोग हमारी तुलना में यहां उनकी सराहना कर रहे हैं और उनका उपयोग कर रहे हैं; और यही हमारा दुर्भाग्य और उनका सौभाग्य है।

www.ignited.in

निष्कर्ष

भारतीय समाज में सत्य और पूर्णता के प्रत्येक साधक को स्वतंत्र रूप से अपनी पद्धति का अनुसरण करने की अनुमति है और किसी से भी इसमें हस्तक्षेप करने की अपेक्षा नहीं की जाती है। हमें भारतीय दर्शन में जो सबसे अच्छा है उसे संरक्षित करना है और जो कुछ भी पश्चिमी विज्ञान में सबसे अच्छा है उसे अवशोषित करना है। हमें नैतिकता को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर युवाओं में चरित्र निर्माण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय दर्शन और प्राचीन भारतीय शिक्षा में जो कुछ भी अच्छा और महान था, के अध्ययन को बढ़ावा देना है। प्राचीन नैतिक शिक्षा की सबसे आवश्यक विशेषता जो इसे आधुनिक वैज्ञानिक संस्कृति से अलग करती है, वह है मनुष्य की प्रकृति और ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों के साथ उसके संबंधों की गहन समझ। मनुष्य के लिए अपने आप में वास्तविकता के कई और पहलू खुले हैं, जो बाहरी प्रकृति के अवलोकन से उसे पता चलता है। आधुनिक विज्ञान जो अपने ज्ञान को बाहरी प्रकृति के अवलोकन तक सीमित रखता है, वास्तविकता की प्रकृति में गहराई से नहीं जा सकता है। यद्यपि वैज्ञानिक ज्ञान बहुत जानकारीपूर्ण और उपयोगी साबित हुआ है, इसने मनुष्य की गहरी प्रकृति के लिए हमारी आँखें बंद कर दी हैं और इसके परिणामस्वरूप हम जो कुछ भी जानना चाहिए था, उससे बहुत कुछ चूक जाते हैं। आधुनिक मनुष्य मनुष्य और ब्रह्मांड के बाहरी इलाके तक ही सीमित है, एक ऐसी सभ्यता का निर्माण कर रहा है जो जीवन के अनाज की तुलना में भूसी से अधिक चिंतित है, इसलिए उन लोगों के मन में आधुनिक जीवन शैली के प्रति असंतोष बढ़ रहा है जो अधिक गहराई से उपहार में हैं जागरूकता। मनुष्य का गहरा ज्ञान प्राचीन भारतीय शिक्षा की विशेषता है। स्वभाव से हम सब असंस्कृत और असभ्य हैं। एक सुसंस्कृत व्यक्ति एक अनुशासित व्यक्ति होता है, जिसने अपनी प्राकृतिक प्रवृत्तियों को नियंत्रण में लाया है। यह अनुशासन ही है जो हमें जीवन में उच्च स्तर तक ले जाता है। मनुष्य अपने आचरण से ऊँचे स्तर तक उठ सकता है या जानवरों के स्तर तक गिर सकता है। यदि हम विवेकपूर्ण नियंत्रण की अपनी शक्ति का उचित उपयोग करते हैं और अपने आप को उस आदर्श चित्र में ढालते हैं जिसे मानवता के महान संतों और नेताओं ने हमारे सामने रखा है, तो हम दिव्य और हमारे समाज को स्वर्ग के समान बना सकते हैं। सभी को नैतिक सिद्धांतों के सख्त पालन में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिन्हें संयम कहा जाता है, जो हर समय और सभी तरह से सभी प्राणियों के खिलाफ दुर्भावना से मुक्ति, सत्यता, दूसरों की संपत्ति के दुरुपयोग से परहेज, ब्रह्मचर्य यौन शुद्धता और पैसे का लालच नहीं है। महात्मा गांधी ने इन प्रतिबंधों पर बहुत जोर दिया और उम्मीद की कि प्रत्येक देशवासी उनमें से कम से कम पहले दो, अर्थात् सत्य और अहिंसा का पालन करें। उपनिषद घोषणा करते हैं कि मनुष्य अपने गहरे स्वभाव में एक है और उस परम आत्मा के समान है जो ब्रह्मांड को बनाए रखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

एंडरसन, एच। (2019)। बच्चों के साथ शिक्षक के संपर्कों में वर्चस्व और सामाजिक रूप से संवादात्मक व्यवहार का मापन। बाल विकास, खंड (10), 73-89।

अरोड़ा, संतोष. (2013)। आधुनिकीकरण और मानवीय मूल्य। शैक्षिक समीक्षा, 46 (8), 155।

बेनेट, डब्ल्यू। (2013)। क्या हमारी संस्कृति का ह्रास हो रहा है?शिक्षा सप्ताह,12(28),32।

भार्गव। (2016)। ठोस और औपचारिक परिचालन चरणों में बच्चों के बीच नैतिक निर्णय का विकास और गृह और शैक्षिक पर्यावरण के चर के साथ इसका संबंध। पीएचडी शिक्षा। पंजाब विश्वविद्यालय।

भटनागर, सुरेश. (2014)। भारत में शिक्षा। मेरठ: लॉयल बुक डिपो।

भट्टाचार्य, रामकृष्ण। (2012)। भारत में भौतिकवाद- एक सारगर्भित दृष्टिकोण। 27 जुलाई 2012 को लिया गया।

भूषण, आनंद. (2017)। किशोरों के दृष्टिकोण पर संप्रदाय और धर्मनिरपेक्ष विद्यालयों का प्रभाव। शिक्षा में क्वेस्ट, XIV (3), 17-22।

कालरा। (2016)। भारत के विशेष संदर्भ में विकासशील देश में मूल्यों पर आधारित पाठ्यचर्या। अंबाला छावनी: भारतीय प्रकाशन ब्यूरो।

कैंपबेल, वी।, और बॉन्ड, आर। (2012)। एक चरित्र शिक्षा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन। न्यूयॉर्क: इरविंगटन पब्लिशर्स।

चटर्जी, सतीशचंद्र।, दत्ता, धीरेंद्रमोहन। (2014)। भारतीय दर्शन का एक परिचय। कलकत्ता: कलकत्ता विश्वविद्यालय।

चतुर्वेदी, वी।, और गिन्सबर्ग, एम। (2018)। शिक्षक और भारत में व्यावसायिकता की विचारधारा। तुलनात्मक शिक्षा समीक्षा, 32(4)।

चौबे, एस.पी. (2018)। भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएं। आगरा: अग्रवाल प्रकाशन।

www.ignited.in

कोल, डब्ल्यू.जी. (2017)। आज मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता में आधुनिक मनुष्य की बेचैन खोज। वैल्यू एजुकेशन आज की चुनौती निर्मला

रानी। एम। (2018)। बच्चों में नैतिक विकास। पीएचडी मनोविज्ञान, इलाहाबाद।

दास, आर.सी. (2018)। मूल्यों में शिक्षा के लिए शिक्षक तैयारी। शिक्षक शिक्षा के लिए भारतीय जर्नल, 1(1), 68

डैश एम. (2010), एजुकेशन इन इंडिया- प्रॉब्लम्स एंड पर्सपेक्टिव्स, ईस्टर्न बुक कॉर्पोरेशन।

दया, पंत. (2011)। मूल्य शिक्षा के वैचारिक पहलू। जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन, वॉल्यूम (1)।

डी सूजा। (2013)। भारत में पब्लिक स्कूलों का समाजशास्त्रीय अध्ययन। पीएचडी शिक्षा। दिल्ली विश्वविद्यालय।

देसाई, सोनाल्डे, अमरेश दुबे, बी.एल. जोशी, मिताली सेन, अबुसालेह शरीफ और रीव वेन्नमैन। (2010)। भारत में भारत मानव विकास- संक्रमण में एक समाज के लिए चुनौतियां। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

Corresponding Author

Preeti Shakya*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in